ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तत्र भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 43, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 जनवरी, 2020 से रविवार 12 जनवरी, 2020
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 4 से 12 जनवरी, 2020 : आर्यसमाज के वैदिक साहित्य स्टाल का उद्घाटन सम्पन्न

पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की धूम : सत्यार्थ प्रकाश बना पुस्तक प्रेमियों की पहली पसन्द

भारी संख्या में पहुंचकर आर्यजन करें उत्साहवर्धन

आपके सहयोग की आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

हिन्दी : हॉल नं. 12
स्टाल : 151-160

बाल साहित्य
हॉल : 7H स्टाल : 62-63

मेला समापन
12 जनवरी, 2020
रात्रि 8 बजे

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 4 जनवरी से 12 जनवरी 2020 तक आयोजित होने वाले विश्व पुस्तक मेले में आर्य समाज के वैदिक साहित्य के विशाल स्टॉल का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा किया गया। ज्ञात हो कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लगातार वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए कृत संकल्प है। पुस्तक मेलों और विश्व पुस्तक मेलों में महर्षि दयानंद सरस्वती, वेद और आर्यसमाज की विचारधारा और कल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत सभा द्वारा आर्य समाज स्टॉल संख्या 151-160 हॉल नं 12ए, स्टॉल संख्या 62-63, हॉल 7 एच के उद्घाटन के अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्रीमती वीना आर्या जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री सुरेन्द्र चौधरी जी, श्री मुकेश आर्य जी, श्री एस.पी.सिंह जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री रमेश चंद आर्य जी, श्री सुखवीर सिंह आर्य जी, श्री गोविंद राम अग्रवाल जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी इत्यादि महानुभाव उद्घाटन अवसर पर उपस्थित थे। यह मेला लगातार 8 दिनों तक चलेगा और इसमें विश्व स्तर पर पुस्तकें और साहित्य के विभिन्न स्टॉल लगे हुए हैं। इन सबके बीच वैदिक साहित्य का स्टॉल अपने आपमें एक अद्भुत प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहा है।

सत्यार्थ प्रकाश वितरण

मानव समाज को सुपथ दिखाने वाले, संपूर्ण धरा पर प्रेम सुधा बरसाने वाले, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर करोड़ों लोगों का जीवन प्रकाशित हुआ हुआ है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस महान संकल्प की पूर्ति के लिए विश्व पुस्तक मेले में नाममात्र के मूल्य 10 रुपए में प्रतिदिन हजारों लोगों को सत्यार्थ प्रकाश प्रदान किया जा रहा है। जिससे महर्षि दयानंद जी की शिक्षाओं से हजारों लोग परिचित हो रहे हैं। सभा का प्रयास है कि कम-से-कम 50 हजार नए महानुभावों को जो कि आर्य समाज से परिचित नहीं हैं। उन्हें सत्यार्थ प्रकाश प्रदान किया जाएगा।

दिल्ली सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 130 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे और विश्व के सभी देशों में मानवमात्र के जीवनों को प्रकाशित करे। इसके लिए सभा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी विश्व पुस्तक मेला 2020 में बहुत ही कम कीमत पर सत्यार्थ प्रकाश वितरण कर रही है-

"आओ हाथ बढ़ाएं, ऋषि दयानंद की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाएं

सत्यार्थ प्रकाश को अत्यंत कम मूल्य मात्र 10 रुपए में जन-जन तक पहुंचाने के लिए 20/- रुपये प्रति पुस्तक का आर्थिक सहयोग प्रदान करें। दानदाताओं के नाम साप्ताहिक आर्यसन्देश में पकाशित किए जाएंगे। आप अपना सहयोग सीधे सभा के बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं और चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा भी सभा के पते पर भेज सकते हैं।

- शेष पृष्ठ 5 पर

50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/- रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने में अपना योगदान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अत: आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।

सत्यार्थ प्रकाश छूट हेतु दी गई दानराशि 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। दानदाताओं महानुभावों के नाम आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किए जाएंगे

आप अपना सहयोग 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर के माध्यम से भेज सकते हैं। आप अपना दानराशि सीधे तौर पर निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा A/c No. 1098101000777 केनरा बैंक संसद मार्ग IFSC Code : CNRB0001098 MICR No. :110015025
कृपया अपनी दान राशि जमा कराते ही श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित अवश्य करें तथा अपनी जमा स्लिप भी इसी नं. पर व्हाट्सएप्प करें ताकि आपको दान की रसीद भेजी जा सके और आर्यसन्देश में नाम भी प्रकाशित किया जा सके।

विश्व पुस्तक मेले में समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175) को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

हृदय मन्दिर में देवों का ही राज्य

अव यत्स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरीक्षे।
राजन्नप द्विषः सेध मीढ्वो अप स्त्रिधः सेध।। -ऋग्. 8/79/9
ऋषिः **कृत्नुर्भार्गवः**।। देवता - **सोमः**।। छन्दः **निचृदनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - राजन् = सच्चे राजन् ! सोम ! तुम **यत्** = जब **स्वे** = अपने **सधस्थे** = इस सहस्थान में **देवानाम्** = देवों की **दुर्मतीः** = दुर्मतियों को, विपरीत भावों को **ईक्षे** = देखो तो **मीढ्वः** = हे सिंचन करने वाले ! तुम **द्विषः** = द्वेषों को **अपसेध** = दूर कर दो और **स्त्रिधः** = हिंसावृत्तियों को **अपसेध** = दूर कर दो।

विनय-हे सच्चे राजन् ! सोम ! यह हृदय तुम्हारा सधस्थ है, सहस्थान है। तुम परमपदस्थ होते हुए भी इस हृदय में मेरे साथ में आ बैठे हो, अतः जब तुम कभी अपने इस सधस्थ में देवों की दुर्मतियाँ देखो, जब तुम यह देखो कि इस हृदय में देवों की सुमतियों की जगह दुर्मतियाँ प्रकट हो रही हैं, दिव्य वृत्तियों का विपरीत भाव हो रहा है तो तुम इस दुरवस्था को हटाने के लिए, हे मीढ्वः, हे अमृत के सिंचन करनेवाले! मेरे सब द्वेषों को दूर कर दो, मेरे सब हिंसनों को हटा दो, अपना प्रेमरस प्रवाहित करके मेरे द्वेषभावों व हिंस्त्र वृत्तियों को बाहर बहा दो। हे सोम ! तुम्हारे अमृत-सिंचन के होते हुए ये द्वेष आदि कैसे रह सकते हैं? सचमुच ये द्वेष व हिंसा के भाव ही हैं जिनके कारण मेरे हृदय से देवों का राज्य हट जाता है, देवों की सुमतियाँ उठ जाती हैं और ऐसी दुर्दशा उपस्थित हो जाती है। हे सोम ! क्या तुम कभी अपने इस पवित्र सधस्थ की ऐसी दुर्दशा देख सकते हो? क्या तुम्हें कभी अपने इस हृदय=सहस्थान की यह दुरवस्था सह्य हो सकती है? यदि नहीं, तो हे देव ! हमारी तुमसे एक ही प्रार्थना है कि तुम इस हृदय में अपना ऐसा अमृत-सिंचन करो कि इसमें द्वेष व हिंसा का लवलेश भी शेष न रहे। तब मेरे हृदय में देवों का ही राज्य हो जाएगा, देवों का ही सुमतिपूर्ण राज्य हो जाएगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

विरोध-प्रदर्शन के पीछे क्या है - मंशा?

जे. एन. यू. में फिर से ताण्डव

.....जैसे ही अब जवाहर लाल नेहरू में छात्रों का आपसी विवाद गहराया इस विवाद के बाद राजनीति गरमाती जा रही है। बड़े-बड़े नेताओं के बयान सामने आते जा रहे हैं। राहुल गांधी से लेकर प्रियंका गांधी जहां पहले ही घटना की निंदा कर चुके हैं वहीं गृहमंत्री अमित शाह ने हमले की जांच के आदेश भी दे दिए। अचानक बवाल के खिलाफ जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, जाधवपुर यूनिवर्सिटी समेत देश भर में फिर अचानक हर बार की तरह एक चिन्हित वर्ग विरोध प्रदर्शन करने पर उतारू हो गया। विरोध का आलम ये बना कि मुंबई में हाथ में पोस्टर लेकर और हिंसा के खिलाफ नारे लगाते हुए गेटवे ऑफ इंडिया पर बड़ी संख्या में लोगों ने आंदोलन किया। यहाँ तक फ्री कश्मीर के पोस्टर भी इसमें लहराए गये।......

खबर कौन-सी बड़ी होनी चाहिए और कौन-सी छोटी यह बात राजनेता और मीडिया मिलकर तय करते हैं। पिछले दिनों पुरानी दिल्ली में हुई आग की घटना में 43 लोगों की मौत के मामले में भी मीडिया चुप्पी साधे रहा क्योंकि दिल्ली सरकार के करोड़ों के विज्ञापनों का दम था कि इस अग्निकांड के लिए कहीं भी दिल्ली सरकार पर उंगली न उठे। दुर्घटना के बाद मुख्यमंत्री दिल्ली में ही चुनावी रैलियां करते रहे, लेकिन किसी चैनल ने इस बारे में कोई सवाल नहीं पूछा गया। इसके बाद राजस्थान के कोटा में 100 से अधिक नवजात बच्चे मौत के मुंह में समा गये लेकिन छुट पुट बयानबाजी के अलावा कोई ठोस कदम धरातल पर उतरता दिखाई नहीं दिया।

किन्तु जैसे ही अब जवाहर लाल नेहरू में छात्रों का आपसी विवाद गहराया तो इस विवाद के बाद राजनीति गरमाती जा रही है। बड़े-बड़े नेताओं के बयान सामने आते जा रहे हैं। राहुल गांधी से लेकर प्रियंका गांधी जहां पहले ही घटना की निंदा कर चुके हैं वहीं गृहमंत्री अमित शाह ने हमले की जांच के आदेश भी दे दिए। अचानक बवाल के खिलाफ जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, जाधवपुर यूनिवर्सिटी समेत देश भर में फिर अचानक हर बार की तरह एक चिन्हित वर्ग विरोध प्रदर्शन करने पर उतारू हो गया। विरोध का आलम ये बना कि मुंबई में हाथ में पोस्टर लेकर और हिंसा के खिलाफ नारे लगाते हुए गेटवे ऑफ इंडिया पर बड़ी संख्या में लोगों ने आंदोलन किया। यहाँ तक फ्री कश्मीर के पोस्टर भी इसमें लहराए गये।

साफ कहा जाये तो कुछ वर्ष पहले आतंकी मकबूल भट्ट की बरसी मनाने से चला जे.एन.यू. विवाद अब फ्री कश्मीर जैसे नारे तक पहुँच गया। हर एक राजनितिक मुद्दे पर सड़कों पर निकलकर शोर मचाने वाले छात्र सोचते हैं कि वह रोजगार, समाजवाद भय-भूख के खिलाफ कोई युद्ध कर रहे हैं। जबकि अगर ध्यानपूर्वक देखा जाये तो इसकी आड़ में ये छात्र एक कलुषित मानसिकता के शिकार बन रहे हैं। हर वक्त इस विश्व विद्यालय में आइसा (आल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन) और एसएफआई (स्टूडेन्ट फेडरेशन आफ इंडिया) को व्यवस्था से लड़ते हुए दिखना ही पड़ेगा। उन्हें वजह बेवजह सरकार से लड़ते हुए दिखना है, उन्हें खुद को पीड़ित की तरह पेश करना है। छात्रों के पक्ष में यदि सरकार अपने फैसले पर पुनर्विचार करे तो उसे अपनी जीत के तौर पर पेश करना है। किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाये तो आज ये घायल छात्र इस अपने भविष्य के बजाय चंद राजनितिक परिवारों और पार्टियों के लिए ज्यादा लड़ रहे हैं। एक ऐसी विचारधारा के पोषण के लिए जिसमें नक्सल और भारत विरोध का वायरस लगा हुआ है।

आइसा की स्थापना 1990 में हुई थी। अब यह सवाल हो सकता है कि इतने नए संगठन को एक हिंसक आंदोलन से जोड़ना क्या उचित होगा? यहां महत्वपूर्ण है कि आइसा की राजनीति जिन दीपांकर भट्टाचार्य और कविता कृष्णन से प्रेरणा पाती है, उनकी सहानुभूति किस तरफ है, यह किसी से छुपा है? क्योंकि नाम बदल लेने से राजनीति कब बदल जाती है? कविता कृष्णन खुले तौर पर कश्मीर में चरमपंथ को प्रोत्साहित करती है। भारतीय सेना की आलोचना इनका पेशा है। कुछ समय पहले धारा 370 हटाने के 30 दिन होने के बाद कविता ने एक बंधक कश्मीरी की तस्वीर को अपना प्रोफाइल पिक्चर पर लगाया था। इस प्रोफाइल पिक्चर में कश्मीर के हिस्से को रक्त रंजित बताया गया और साथ ही अंधकार के 30 दिन, कश्मीर को धोखा और कश्मीर के साथ खड़े रहने जैसे संदेश वाले हैशटैग दिए गए थे।

दूसरा भाकपा (माले) के राष्ट्रीय महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य भी समय समय पर अपने बयानों से नक्सलवाद को समर्थन करते रहते हैं। किन्तु जब मीडिया में जे. एन.यू. को लेकर चल रही बहसों को देखते हैं तो विचार आता है कि यह वामपंथ का विचार प्रभावी होने के बावजूद सिमटता क्यों जा रहा है? कभी इस आन्दोलन में किसान था, मजदूर था, दक्षिण अफ्रीका की गरीबी से लेकर इथोपिया के कुपोषण तक की चिन्ता थी लेकिन आज ईरान, इराक, सीरिया में चल रही गतिविधियों पर इनकी पैनी नजर है। अमेरिका-इजराइल का विरोध है, हिन्दू संस्कृति का विरोध हो या कश्मीर में कट्टरपंथ को बढ़ावा देने की इन तमाम चिन्ताओं के साथ महंगी शराब और अच्छी सिगरेट के लिए दुनिया भर के फेलोशिप जुटाने में लगे हैं। इन सबके बीच उन्हें देश की गरीबी का ध्यान अचानक उस वक्त आता है, जब छात्रावास की फीस 30 रुपए से बढ़ाकर 300 रुपए कर दी जाती है। यदि वास्तव में उनकी लड़ाई गरीबी के खिलाफ और अच्छी शिक्षा के लिए है फिर यह सारी सुविधाएं महज दो-चार विश्वविद्यालयों तक सिमट कर क्यों रह जानी चाहिए? क्योंकि इन मुट्ठी भर विश्वविद्यालयों में उन छात्रों का बहुमत है, जिन्हें ये अपने लोग कहते हैं।

जरा सी बात का होव्वा खड़ा करना हो या भारत की छवि को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नीचा दिखाना, वामपंथी संगठनों के पास अपनी बात कहने के लिए सक्षम कैडर है और उसे ठीक तरीके से देश भर में फैलाने के लिए एक मजबूत तंत्र भी। ताजा मामले को ही देखें तो किस तरह रातों-रात बैनर पोस्टर छप गये और सुबह दिल्ली से लेकर मुम्बई समेत देश भर में नाटक किया गया। इसमें इनके पत्रकार, अभिनेता- अभिनेत्रियाँ समेत प्राध्यापक, एनजीओ कर्मियों का एक विशाल नेटवर्क शामिल है। इसके माध्यम से कोई भी बात वे बार-बार कहकर समाज के मन में इस तरह बिठा देते हैं कि हम इस बात का कोई दूसरा पक्ष हो सकता है, इस पर विचार ही नहीं कर पाते। पिछले कुछ दिनों से जे.एन.यू. में पढ़े छात्रों की गरीबी और उस गरीबी से निकल कर सफल हुए लोगों के ऐसे ही किस्से पढ़ने को मिल रहे हैं। यह सब पढ़कर ऐसा लग रहा है कि गरीबी सिर्फ जे.एन.यू. के वामपंथी छात्रों के हिस्से हैं, बाकि सारा देश समृद्ध है। यही कारण है कि जे.एन.यू. आइसा, एसएफआई का गढ़ है, इसलिए बार-बार वह खुद को अपने नाखूनों से नोचकर नाटकीय रूप से वह हमले का शिकार हो रहा है।

- सम्पादक

पापुलर फ्रंट ऑफ इण्डिया की कार गुजारियों की हकीकत बयां करता लेख

पी.एफ.आई. : संगठन के नाम पर अचानक हल्ला क्यों?

.....यूँ तो पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया 2006 में केरल में नेशनल डेवलपमेंट फ्रंट (एन.डी.एफ.) के मुख्य संगठन के रूप में शुरू हुआ लेकिन जुलाई 2010 में पी.एफ. आई. तब सुर्खियों में आया जब इस संस्था के 13 कार्यकर्ताओं ने इस्लाम के अनादर का आरोप लगाकार केरल के इडुक्की में एक प्रोफेसर का हाथ काट डाला था। इसके बाद कन्नूर में आतंकी कैंप लगाना जहां से एनआईए ने कथित रूप से तलवार और बम जब्त किया था, बैंगलुरु में आर.एस.एस. नेता रुद्रेश की हत्या और दक्षिण भारत में आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट से जुड़े संगठन अल हिन्दी के सहयोग से हमले करने की योजना बनाना शामिल पाया गया था।.....

उत्तर प्रदेश में नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान भड़की हिंसा में पी.एफ.आई. का नाम प्रमुखता से सामने आया है. राज्य में सांप्रदायिक रूप से संवदेनशील इलाकों में भीड़ भड़काने, आगजनी, और गोलीबारी करने में सिमी के कथित नए रूप पॉपुलर फ्रंट आफ इंडिया (पी.एफ. आई.) की भूमिका का भी खुलासा हुआ है। इस कारण यूपी की योगी आदित्यनाथ सरकार बड़ा निर्णय लेने जा रही है। योगी सरकार ने हिंसा के मुख्य साजिशकर्ता इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया पर नकेल कसने की तैयारी शुरू कर दी है।

कुछ वर्ष पहले सिमी यानि स्टुडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया भारत में प्रतिबंधित एक मुस्लिम कट्टरपंथी संगठन का जब कई आतंकी घटनाओं में सिमी का हाथ पाया गया तो सरकार की और से इसे 2006 प्रतिबंधित कर दिया गया, उसके फौरन बाद ही शोषित मुसलमानों, आदिवासियों और दलितों के अधिकार के नाम पर पी.एफ.आई. का निर्माण कर लिया गया था। संगठन की कार्य प्रणाली सिमी से मिलती जुलती थी। आज उत्तर प्रदेश में पी.एफ.आई. के बैन की मांग तेज है मगर ऐसा पहली बार नहीं हुआ है जब संगठन को बैन करने की बात हुई है।

संगठन को बैन किये जाने की मांग 2012 में भी हुई थी। दिलचस्प बात ये है कि तब खुद केरल की सरकार ने पी. एफ.आई. का बचाव करते हुए अजीबो-गरीब दलील दी थी कि ये सिमी से अलग हुए सदस्यों का संगठन है जो कुछ मुद्दों पर सरकार का विरोध करता है। जबकि पीएफआई कितना खतरनाक है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि लव जिहाद से लेकर दंगा भड़काने, शांति को प्रभावित करने, लूटपाट करने और अनेकों हत्याओं में इसके कार्यकर्ताओं का नाम आ चुका है। माना जाता है कि संगठन एक आतंकवादी संगठन है जिसके तार कई अलग अलग संगठनों से जुड़े हैं। संगठन की जड़ें केरल के कालीकट से हुई और इसका मुख्यालय दिल्ली के शाहीन बाग में स्थित है। यानि अब आप समझ गये होंगे कि सिमी ही पी.एफ.आई. है।

यूँ तो पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया 2006 में केरल में नेशनल डेवलपमेंट फ्रंट (एन. डी.एफ.) के मुख्य संगठन के रूप में शुरू हुआ लेकिन जुलाई 2010 में पी. एफ.आई. तब सुर्खियों में आया जब इस संस्था के 13 कार्यकर्ताओं ने इस्लाम के अनादर का आरोप लगाकार केरल के इडुक्की में एक प्रोफेसर का हाथ काट डाला था। इसके बाद कन्नूर में आतंकी कैंप लगाना जहां से एनआईए ने कथित रूप से तलवार और बम जब्त किया था, बैंगलुरु में आर.एस.एस. नेता रुद्रेश की हत्या और दक्षिण भारत में आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट से जुड़े संगठन अल हिन्दी के सहयोग से हमले करने की योजना बनाने से शामिल पाया गया था। वर्ष 2012 में केरल सरकार ने केरल हाईकोर्ट को बताया था कि पी.एफ.आई. पर हत्या के 27 और हत्या के प्रयास के 86 और साम्प्रदायिक दंगों के 106 मामले दर्ज हैं। इसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता एन सचिन गोपाल और विशाल की हत्या भी शामिल थी।

पीएफआई इस्लाम के तालिबान ब्रांड को भारत में लागू करना चाहता है देखा जाये तो आज देश के 23 राज्यों में यह अपनी जड़ें जमा चुका है। नवंबर 2012 में देश के विभिन्न हिस्सों में फिलिस्तीन-समर्थक विरोध प्रदर्शनों में भी देखा गया था और बाद में जुलाई 2014 में राष्ट्रव्यापी एकजुटता अभियानों को नाम दिया गया- मैं गाजा हूं। इसके बाद 2015 में मिस्र के कट्टर नेता मोहम्मद मुर्सी और उनके अनुयायियों को दी गई मौत की सजा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया था, नई दिल्ली में मिस्र के दूतावास के सामने यह विरोध प्रदर्शन हुआ।

यही नहीं पी.एफ.आई. पर युवाओं को बरगलाकर आतंकवाद के लिए उकसाने व लड़कियों का ब्रेनवॉश करने के आरोप भी लगे हैं। केरल के लव जिहाद मामले में अखिला उर्फ हदिया के पिता ने आरोप लगाए थे कि जसीना, उसकी बहन फसीना और उनके पिता अबू बकर ने मिलकर अखिला को बहकाया और उसका जबरन धर्मातरण करवाया है। यानि पीएफआई हिंदू महिलाओं का ब्रेनवॉश कर उनकी मुस्लिरमों से शादी और धर्मान्तरण कर रहा है। यदि अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े देखें तो केरल से (2007) में 2167, (2008) में 2530, 2009 में 2909, 2010 में 3232, 2011 3678 और वर्ष 2012 में 4310 लड़कियां लापता हुई हैं। इन लड़कियों में से 3600 के बारे में पुलिस और जांच एजेंसियों तक को भी को कोई जानकारी नहीं है।

इसके अलावा असम में सी.ए.ए. (नागरिकता संशोधन विधेयक) के खिलाफ भड़की हिंसा के मामले में भाजपा के वरिष्ठ नेता ने पिछले हफ्ते आरोप लगाया था कि कांग्रेस के एक धड़े 'शहरी नक्सली' और इस्लामी संगठन पीएफआई के बीच "खतरनाक गठजोड़" हो सकता है जिसने 11 दिसम्बर को प्रदर्शन के दौरान राज्य सचिवालय को जलाने का प्रयास किया और गुवाहाटी में जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे के दौरे के लिए बनाए गए मंच में आग लगाई थी।

लेकिन जब-जब इस संस्था पर लगाम की बात उठी, तब-तब वामपंथी और कथित सामाजिक संगठन और कार्यकर्ता इस्लाम को मासूम अल्पसंख्यक दिखाते है तथा ऐसा जाहिर करते कि भारत में मुसलमान बेहद कमजोर हैं। उसे गाय का बीफ नहीं खाने दिया जा रहा है न उसे हिन्दू लड़कियों से प्रेम करने दिया जा रहा है, उसके धर्म में रूकावट बन रहे हैं उनकी मजहबी आजादी छीन रहे हैं। लेकिन अब खुद उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सरकार के इस फैसले की पुष्टि की है। उन्होंने कहा है कि पी.एफ. आई. का हाथ हिंसा की तमाम घटनाओं में सामने आया है और इस संगठन में सिमी के लोग ही शामिल हैं। ऐसे में अगर सिमी भी इस रूप में उभरने का प्रयास करेगा तो उसे कुचल दिया जाएगा। इस बात में कोई शक नहीं है कि पी.एफ. आई. एक ऐसा संगठन है जो कट्टरपंथ को प्रमोट करता है। मगर इसके बेन की बात यूपी में हुई में हुई है तो पी.एफ.आई. बैन भाजपा कांग्रेस समेत लगभग सभी दलों के लिए राजनीति का एक बड़ा मुद्दा बनेगा।

तमाम दल होंगे जो तुष्टिकरण की आग में घी डालते हुए भाजपा की इस पहल का विरोध करेंगे। जैसा इस देश में राजनीति पर अलग अलग दलों का रुख साफ हो जाता है। आगे आने वाले दिनों में पी.एफ.आई. पर बैन राजनीतिक दलों का ध्यान आकर्षित करेगा और इसपर जमकर रोटी सेंकी जाएगी। बात का सार बस इतना है कि आगे आने वाले वक्त में पी.एफ.आई. पर बैन ही बड़ा मुद्दा रहेगा और भाजपा पर साम्प्रदायिकता के आरोप लगाये जायंगे, लोकतन्त्र को खतरें में बताया जायेगा, संविधान बचाओं जैसे नारे सुनने को मिल सकते हैं हो सकता है इस संगठन को बचाने के लिए तमाम विपक्षी दल एक हो जायें।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

इनकी सामग्री समाप्त हो चुकी है

ऐसी ही घटना पं. भीमसेनजी शास्त्री एम.ए. ने अपने एक लेख में दी है। आर्यसमाज कोटा ने एक शास्त्रार्थ के लिए पण्डित श्री गणपतिजी शर्मा को बुलाया था। पौराणिकों की ओर से पण्डित श्री आत्मानन्दजी षड्-दार्शनिक बुलाये गये। आर्यसमाज ने पण्डित श्री शिवशंकरजी काव्यतीर्थ को भी अजमेर से बुला लिया, वे भी शास्त्रार्थ के ठीक समय पर पधार गये थे। कोटा निवासी पण्डित लक्ष्मीदत्त शर्मा (व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित) आदि कई सनातनी पण्डित शास्त्रार्थ में पण्डित आत्मानन्दजी की सहायता के लिए उपस्थित थे। शास्त्रार्थ में कुछ प्रश्न-उत्तर के पश्चात् श्री पण्डित गणपति शर्माजी ने यह भी कह दिया, ''श्री पण्डित आत्मानन्दजी ने अब तक अपनी कोई एक भी बात नहीं कही है। अबतक जो कुछ इन्होंने कहा है, वह सब अमुक-अमुक ग्रन्थों की सामग्री थी, वह अब समाप्त हो चुकी है, आप देख लेंगे कि अब पण्डितजी के पास मेरे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है।''

पण्डित श्री गणपतिजी शर्मा की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। प्रतिपक्षी पर पण्डितजी का ऐसा रोब पड़ा कि वह एक शब्द भी न बोल सका। बस, खड़ा होकर 'बोल सनातनधर्म की जय' कहकर चल दिया।

स्मरण रहे कि पण्डित श्री लक्ष्मीदत्तजी कहा करते थे कि पण्डित गणपतिशर्मा दर्शनों के ही नहीं, प्रत्युत व्याकरण के भी उद्भट विद्वान् थे। जब कभी पण्डित गणपति शर्मा कोटा में प्रचारार्थ आते, श्री पण्डित लक्ष्मीदत्तजी उन्हें सुनने के लिए आर्यसमाज में अवश्य आया करते थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पुस्तक मेलों में वैदिक साहित्य की भूमिका और सार्थकता

क्यों पढ़ें वैदिक साहित्य ?

.....ईश्वर अपनी अमृत संतान को ऐडियां रगड़-रगडकर दर-दर की ठोकरें खाने के लिए संसार में नहीं भेजता। वह तो मनुष्य को असीम शक्तियों का खजाना प्रदान करता है। प्रत्येक मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, जितनी चाहे ऊंचाई प्राप्त कर सकता है। बस उसे जरूरत है अपनी सुप्त शक्तियों को जगाने की, सही दिशा में आगे बढ़ने की। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वर की अमृतवाणी वेद को पढ़े, वेदों पर आधारित आर्षग्रंथों, को मनुस्मृति को, उपनिषदों को, दर्शन शास्त्रों को, गीता-रामायण को, स्मृति ग्रंथों को पढ़े, इन सब ग्रंथों पर आधारित सरल भाषा में वैदिक साहित्य को पढ़े अथवा सुने, उस पर पूरा सोच-विचार करे, उसे समझे, कसोटी पर रखे और जब मन-बुद्धि और विवेक स्वीकार करें, तभी उस पर अमल करे।......

संस्कृत साहित्य के एक श्लोक का भावार्थ है कि रात्रि में कमल की पंखुड़ियों में बंद होकर भंवरा प्रभात होने का सपना देख रहा है। रात्रि बीतेगी, सुप्रभात होगा, सूर्य की किरणें धरती पर बिखरेंगी और फूल खिल उठेगा, इस तरह कल्पना के लोक में भंवरा विचरण कर रहा था कि एक मदमस्त हाथी ने उस कमल के फूल सहित पौधे को ही अपने पैरों तले कुचल दिया। कमल की कोमल पत्तियों के बीच कैद होकर सपना देखने वाले भंवरे के भीतर इतनी शक्ति थी कि वह कठोर बांस को काटकर भी बाहर निकल सकता था। लेकिन अपनी मोह तथा आसक्ति के कारण, केवल सपने देखने की वजह से काल का ग्रास बन गयाा। इसलिए भारत के पूर्व रा ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम साहब कहा करते थे कि सपने वे नहीं होते जो हम सोते हुए देखते हैं। बल्कि सपने तो वे होते हैं जो आपको बिस्तर में दुबककर सोने नहीं देते, जागरण का बार-बार ध्यान दिलाते हैं, जिन्हें आप अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरंतर देख रहे होते हैं और अपने सपनों को पूरा करने का प्रयास करते रहते हैं। वैदिक साहित्य मनुष्य मात्र को यही सिखाता है कि हम अपने जीवन में अच्छे और सच्चे सपने देखें, जिनके अनुसार हम आगे बढ़ें और ऊंचे उठें, जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को पहचानें और जो प्राप्त करने के लिए हम संसार में आए हैं, उसे प्राप्त करें। इसलिए वैदिक साहित्य को पढ़कर अंधेरों से निकलकर प्रकाश तक पहुंचने का सपना देखें, प्रकाश से लगातार प्रकाश की ओर बढ़ने का सपना देखें, स्वयं प्रकाश प्राप्त करते हुए दूसरों के अंधेरे जीवन में रोशनी भरने का सपना देखें, ऐसे सुंदर सपने देखना मनुष्यों को आ जाए तो वह मंजिल तक अवश्य पहुंचेंगे। आजकल समाज में यह अक्सर कहा-सुना जाता है कि आर्य समाज यह नहीं मानता और आर्य समाज वह नहीं मानता ? आर्य समाज यह नहीं करता और आर्य समाज वो नहीं करता ? आदि। किंतु आर्य समाज ही मानव समाज को भय-भ्रम के पार ले जा सकता है। मनुष्य मात्र को सुदिशा आर्य समाज ही दे सकता है। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि हम आर्य समाज के वैदिक साहित्य को पढ़ें, सुनें, सोचें और जीवन में धारण करें।

आजकल मनुष्य जो चाहता है, वह उसे मिल नहीं पाता, जो मिलता है, उससे मनुष्य की कामनओं का मेल नहीं खाता। फिर मनुष्य अपनी किस्मत को कोसता है, ईश्वरीय नियम, सिद्धांत और व्यवस्थाओं में दोष निकालता है, अपने रिश्ते-नातों के प्रति गुस्सा करता है। ऐसा मनुष्य भय-भ्रम का शिकार हो जाता है और दु:खमय जीवन जीता है। सब जगह कमियां निकालता है। मेरे साथी अच्छे नहीं हैं, मेरे परिवार वाले मेरा साथ नहीं देते, मेरी मजबूरी को कोई नहीं समझता। पता नहीं मेरी किस्मत में क्या लिखा है ? क्या करूं, क्या न करूं ? कुछ समझ नहीं आता। मनुष्य की मानसिकता, उसकी बुद्धि, विवेक शक्ति असंतुलित हो जाती है।

इसलिए दुनिया में कुछ लोग समाज की नब्ज देखते रहते हैं, समाज में क्या चल रहा है ? लोग कैसी उलझनों में फंसे हुए हैं ? कैसा सोचते हैं ? कैसा बोलते हैं, कैसा करते हैं, वे लोग मीडिया के माध्यम से और अपने नए-नए तरीकों से समीक्षा करते रहते हैं। फिर उसी तरह की शब्दावली, उसी तरह का मीठा व्यवहार करके लोगों को अपने जाल में फसाते हैं, बहलाते हैं, फुसलाते हैं, डराते हैं, उनके मन में अपना झूठा अंधविश्वास जगाते हैं, फिर उनसे पैसा ठगते रहते हैं और भोले-भाले लोग अपनी विचारशीलता, कर्मशीलता को जंग लगाकर बैठ जाते हैं। वे स्वार्थी लोग उन सरल लोगों की दुखती रगों को छेड़ते हैं। उनसे पूछते हैं कि भाई, कुछ धर्म-कर्म भी करते हो ? भगवान के मंदिर में जाते हो ? व्यक्ति कहता है कि हर सप्ताह अमुक मंदिर में नियम से जाता हूं, फला भगवान को पूजता हूं। फिर स्वार्थी कहता है, अच्छा आप इस बार इस मंदिर में नहीं, इस भगवान को नहीं, उस दूसरे मंदिर को और दूसरे भगवान को ट्राई कीजिए, तुम्हें बहुत लाभ होगा। इस तरह स्वयं के कर्मो के फल से दुखी व्यक्ति जो पांच साल में, पच्चीस वर्षो का काम करके शीघ्रता से अमीर बनने का सपना देखता है, इधर से उधर दर-दर की ठोकरें खाता फिर रहा है और लोग उसे छल कर अपना गोरखेधंधा चला रहे हैं, मौज कर रहे हैं।

ईश्वर अपनी अमृत संतान को ऐडियां रगड़-रगडकर दर-दर की ठोकरें खाने के लिए संसार में नहीं भेजता। वह तो मनुष्य को असीम शक्तियों का खजाना प्रदान करता है। प्रत्येक मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, जितनी चाहे ऊंचाई प्राप्त कर सकता है। बस उसे जरूरत है अपनी सुप्त शक्तियों को जगाने की, सही दिशा में आगे बढ़ने की। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वर की अमृतवाणी वेद को पढ़े, वेदों पर आधारित आर्षग्रंथों को मनुस्मृति को, उपनिषदों को, दर्शन शास्त्रों को, गीता-रामायण को, स्मृति ग्रंथों को पढ़े, इन सब ग्रंथों पर आधारित सरल भाषा में वैदिक साहित्य को पढ़े अथवा सुने, उस पर पूरा सोच-विचार करे, उसे समझे, जब मन-बुद्धि और विवेक स्वीकार करें, उस पर अमल करे।

आर्य समाज के वैदिक नियम-सिद्धांत कठिन तो हो सकते हैं। लेकिन इस कठिन राह पर चलने से ही जीवन का मार्ग सरल हो पाएगा। वैदिक साहित्य हमें यह सिखाता है कि किसी के चमत्कार, किसीके बहुत बड़े विज्ञापन, किसी के नाटकों से कभी भी प्रभावित मत होइए। आपका मन, बुद्धि और आपका हृदय जब जिस बात को गवाही दे, तभी किसी बात को स्वीकार करिए, इसलिए भी प्रभावित नहीं होना कि किसी के पास में बहुत भीड़ आ रही है। इतने सारे लोग जा रहे हैं तो जरूर कोई बात होगी, यह बात कभी मत सोचना, क्योंकि आज का युग विज्ञापन का युग है, लोग नाटक और ड्रामा बहुत भारी करते हैं। आजकल वे लोग जिनको पहले से ही यह सिखाया जाता है कि खड़े होकर यह कहिए कि हमारे जीवन में यह चमत्कार हो गया, हमें यह लाभ हो गया, बीस-बीस

- शेष पृष्ठ 6 पर

"सेवा का सही मतलब सिद्ध कर रहा है-सहयोग"

मेघ सागर में जाकर बरसते रहे! वन-उपवन में कलियां तरसती रही।।

सेवा का मतलब यह नहीं कि हम भरे हुए को भरते रहें या एक भिखारियों की भीड़ खड़ी कर दें। सेवा का मतलब तो यह है कि जो लोग वास्तव में जरूरतमंद हैं। जीवन की मूलभुत जरूरतों की पूर्ति के लिए परेशान हैं। उनको वे साधन, सुविधाएं प्रदान की जाएं जिन्हें पाकर वे स्वयं उचित परिश्रम और पुरुषार्थ कर आगे बढ़ सकें। सेवा के क्षेत्र में आर्य समाज की संस्था "सहयोग" अपने अनुपम और अद्भुत अथक प्रयासों से निरंतर सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। अभी पिछले दिनों बुंदेलखंड के गांव चांदपुर और जहाजपुर में सहरीया जनजाति के लोगों को, जो कि सर्दी के मौसम में गर्म कपड़ों से महरूम थे। ऐसे गरीब गांव में जाकर "सहयोग" की टीम ने गर्म वस्त्रों का वितरण किया। सर्दी से बेहाल निर्धन लोग और बच्चे गर्म वस्त्रों में स्वेटर, जाकेट और हुड आदि प्राप्त करके इतना खुश हुए कि जैसे उन्हें मनमांगी मुराद मिल गई हो। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि अभाव में जीने वाला व्यक्ति ही साधनों के प्रभाव का महत्व जानता है। इन बच्चों के पास में अच्छे गर्म वस्त्रों का अत्यंत अभाव था। इसलिए "सहयोग" द्वारा प्रदान किए गए वस्त्रों से इन्हें अपार खुशी प्राप्त हुई।

"सहयोग" आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा का एक ऐसा मिशन है जो हमेशा जरूरतमंद लोगों की खोज करता है। इसके लिए चाहे आदिवासी क्षेत्रों के गांव हो अथवा शहरों, नगरों की निर्धन बस्तियों में रहने वाले गरीब, मजदूर लोग ही क्यों न हों। सहयोग का मानना है कि धरती पर रहने वाला प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की अमृत संतान है। सबको सुख, समृद्धि प्राप्त हो, सबके चेहरो पर हंसी-खुशी हो, सबका कल्याण हो। अत: आप भी "सहयोग" से जुड़ने के लिए 9540050322 पर सम्पर्क करके मानव सेवा की मजबूत मुहिम से जुड़ सकते हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की बढ़ती मांग : विश्व पुस्तक मेले 2020 में वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति की लगातार मांग बढ़ रही है। सत्यार्थ प्रकाश लेने के लिए लोग आर्य समाज स्टॉल संख्या 151-160 हॉल नं 12ए में तथा स्टॉल संख्या 62-63 हॉल नं. 7एच में उमड़ रहे हैं। वेदों पर आधारित आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों, संन्यासियों, चिंतकों, लेखकों की हजारों पुस्तकें भी विशेष आकर्षण का केंद्र बन रही है। विश्व पुस्तक मेले 2020 के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन द्वारा 3 नयी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। जिनमें ईश्वर अवतार, शास्त्र सम्मत है? आनंद का मार्ग उपासना और युगधर्म की अत्यधिक डिमांड है। सभी आर्यजनों से आग्रह है कि वे भी इन पुस्तकों को अवश्य खरीद कर पढ़ें और पढाएं।

'सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये में' आवाज देकर पुस्तक प्रेमियों को आकर्षित करते आर्यसमाज के समयदानी कार्यकर्ता

वैदिक धर्म, संस्कृति को लेकर सत्यार्थ प्रकाश के विषय में जानकारी तथा अन्य मतावलम्बियों के प्रश्नों/शंकाओं का समाधान करते डॉ. सर्वेश वेदालंकार एवं आचार्य भद्रकाम वर्णी जी

आर्यसमाज के वैदिक साहित्य प्रचार स्टालों पर उपलब्ध विभिन्न वैदिक साहित्य का अवलोकन/चयन एवं क्रय करते पुस्तक प्रेमी तथा सेवा प्रदान करते कार्यकर्ता

प्रगति मैदान में पुस्तक मेले के अवसर पर आर्य समाज के अधिकारियों का प्रशंसनीय समय दान : विश्व पुस्तक मेला 2020 में आर्य समाज के अधिकारियों द्वारा प्रशंनसीय समय दान दिया जा रहा है। लगातार 4 जनवरी 2020 से वहां पर संयोजक डॉ. मुकेश आर्य जी, सहसंयोजक श्री सुखवीर सिंह आर्य जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, श्री शिव कुमार मदान जी, श्री सतीश चड्डा जी, श्री सुरेश चंद गुप्ता जी, श्री वीरेन्द्र सरदाना जी, श्री एस.पी.सिंह जी, श्रीमती विद्यावती आर्या जी, श्रीमती सुषमा आर्या जी, श्री प्रद्युम्न आर्य जी, श्री जयपाल गर्ग जी, श्री रमेश चंद्र जी, श्री राजेन्द्र पाल आर्य जी, श्री कवंरभान खेत्रपाल जी, श्रीमती नवनीत अग्रवाल जी, श्री प्रेमशंकर आर्य जी, श्रीमती रानी जी, श्री देवेन्द्र सचदेवा जी, श्री शीशपाल जी, श्रीमती हर्ष आर्या जी, श्री वेदव्रत जी, श्री ऋषिराज वर्मा जी, श्रीमती कुसुम आर्या जी, श्री ओम प्रकाश गोयल जी, श्री सुरेन्द्र वर्मा जी एवं श्री रविप्रकाश आर्य जी इत्यादि महानुभाव अपना बहुमूल्य समय देकर लगातार सेवा प्रदान कर रहे हैं। सभी को बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक आभार।

विश्व पुस्तक मेला - 4 जनवरी से 12 जनवरी, 2020 प्रगति मैदान, नई दिल्ली में

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

1. आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 575634 (द्वारा श्री धर्मपाल आर्य जी, सभा प्रधान) 12 स्टालों की बुकिंग कराने हेतु
2. आर्यसमाज हनुमान रोड 21000
3. आर्यसमाज पंखा रोड जनकपुरी 11000
4. ठाकुर विक्रम सिंह जी 11000
5. आर्यसमाज सुन्दर विहार 11000
6. आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी 10000
7. आर्यसमाज सागरपुर 2100
8. आर्यसमाज आदर्श नगर 2100
9. आर्यसमाज रोहतास नगर शाहदरा 2100
10. आर्यसमाज शाहबाद मुदम्मदपुर 1100
11. आर्यसमाज किरण गार्डन 1000
12. डॉ. मुकेश आर्य 'सुधीर' 500

- क्रमशः

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया, जिला झाबुआ (म.प्र.) में

योग चरित्र निर्माण, शारीरिक उन्नति एवं आत्मरक्षा सप्त दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

महाशय धर्मपाल (MDH) दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया में रविवार को योगचरित्र निर्माण, शारीरिक उन्नति एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में बच्चें, पालक, गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन एवं स्वागत गीत द्वारा किया गया। कार्यक्रम सुशील जी बाजपेयी (राष्ट्रीय एथलीट पावर लिफ्टिंग, कुश्ती, झाबुआ) के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमती संगीता सोनी, रामेश्वर गर्ग, दयासागर जी व भंवरलाल जी बाफना के विशिष्ट आतिथ्य एवं श्रीमान गोवर्धन सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रामेश्वर जी गर्ग ने भी छात्रों द्वारा किये गए प्रदर्शन को सराहा एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। प्राचार्य श्री प्रवीण आत्रे एवं प्रशासनिक अधिकारी श्री संदीप बिसारिया द्वारा अतिथियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया। प्राचार्य श्री आत्रे ने अतिथियों का परिचय कराया तथा प्रबंधन संस्था अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी, महामंत्री श्री जोगिंदर खट्टर एवं पदाधिकारियों द्वारा भेजे शुभकामना संदेश का वाचन किया। साथ ही आज के इस आयोजन के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी। कार्यक्रम में सप्त दिवसीय आवासीय शिविर के अन्तर्गत आर्यवीरों द्वारा सीखे गए विभिन्न कौशलो का प्रदर्शन आचार्यो के मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ। कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। संगीत शिक्षक श्री शैलेश त्रिपाठी द्वारा आकर्षक भजन की प्रस्तुति दी गयी।

शिविरार्थियों ने असत्य पर सत्य की विजय को प्रदर्शित करते हुए आसनों द्वारा रथ संचलन का प्रदर्शन किया, जिसकी सभी दर्शकों एवं अतिथियों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। छात्रों ने पारंपरिक साधन लाठी द्वारा प्रदर्शन कर आत्मरक्षा के गुर बताए।

छात्रों ने परेड, पीटी, प्रदर्शन,

- जारी पृष्ठ 6 पर

Continue from last issue

God and The Veda

God: God is supreme. He is the God of gods, who has divine powers associated with HIM. He is the creator of the Universe, and the universe lies within Him. He is Omnipresent and Omniscient. He is divine in qualities, acts and nature. It is He, who should be known by all, not his partial powers or representations. The real 'gods', as they are known, are the 33 divine elements or powers, such as *eight Vasus,* Heated cosmic bodies, planets, atmosphere, superterrestial space, suns, rays of eternal spaces, satellities, stars.

Eleven *Rudras* comprising of ten pranas-Pran, Apan, Vyan, Udan, Saman, Nag, Kurrna Krikal, Devdatte, Dhananjaya, and Jivatma-human Spirit and twelve *Adityas,* comprising of *Chaitra, Vaisakh,* etc., *T]velve* months of the year temporal divisions. These, associated with *Yajna* and electricity. are known as 'Thirty three Deities'. As God is the source and controller of all of them, He is called *'Mahadeva',* i.e. Supreme God. He alone is the creator, sustainer and dissolver of this universe.

Other elements are called 'divine' or 'god' as they derive their divine power from same supreme source, i.e. God, which is ONE. He is always present everywhere, whether we see him or not. As we start any action, good or bad, we feel encouragement or depression and shame, accordingly. It is from the side of God, and not from that of Soul. Soul can see God, only when he engages and devotes himself, after becoming pious, in His consideration. And His realisation is possible, He could still more easily be known through Imagination and Anumana, etc. He is highly judicious and kind. Justice means-to punish the guilty according to the law. Similarly, Kindness means-to award death penalty to a dacoit for his sinful acts, rather than 'pardoning' him away, as it is the real kindness towards the people at large, to save them from such auguries. Hence these attributes of God should never be misunderstood.

God is formless and hence Omnipresent. In the absence of his omnipresence, his other attributes, like that of 'Omnipotent', etc., become meaningless. Though He is formless Himself, He creates this visible universe from the minute causatives. When we say 'Omnipotent', it only means that he creates, sustains or dissolves this creation without the help of anyone else. Because he does dot take birth, so the time-factor does not affect him. And hence he is rightly called 'beginningless'. He alone should be prasied and prayed, and worshipped, but in no way he releases us from the results of our sinful acts. Real 'praise' means to act according to his attributes, Likewise, 'Prayer" makes us selfless, encourages us and gives us confidence of help ; while 'Upasana' enables our soul to come nearer to God.

Soul and Unconscious Element

God and Soul are both two types of Conscients, the former being indivisibly one and the latter 'numerous'. The theory of 'incarnation' does not fit in with Him. It is the result of the ignorance and communal interest; because he must die, who takes birth. But God is out of the reach of birth and death. Though *'Jiva'* or 'Soul' is also beginningless and endless in its nature, still he is associated with and presides over a 'body', created by God. It is therefore that he becomes responsible for its deeds, as it is he himself who engages and controls the mind and senses in different acts. This he does while he remains in the body. The moment it goes out of the body, the latter becomes dead, i.e. senseless and theefore lifeless. Being Omnipresent, God is already present everywhere and in every particle, and it is therefore that He also remains in the body along with the Soul, and even after his departure. But the body remains alive only in the presenee of the Soul, which alone makes it active, by employing it into different activities of its own liking. Thus, by coming into and going out of body, this Soul becomes mobile, while due to His omnipresence he remains everywhere, though being static at the same time. The mind alongwith *Indriyas* or senses is called *Antahkarana* or inner instrument and is an associate of soul. It is this instrument through which Soul acts in a body and also feels sorrows and joy as the result of those acts. It is therefore that while God is said to be constant or everpresetn (Sat) Conscient (Chit), and everjoyous *(Anandarupa),* this Soul is said to be only *Sat* and *Chit,* because he also feels sorrows alongwith the joy. But the third immortal and unborn element is Nature or *Prakriti,* which has neither *chit* nor *Ananda* and is therefore called as *Sat* alone. Being non-conscient, it is said to be immobile and non-moving: Because of being Omni- present and Omnipotent God is Omnipresent also, and therefore He is present in every living Soul. It is therefore that He needs no mouth or other speaking organ or system to give sermon or to teach someone. He only illuminates all the knowledge enshrined in the *Vedas* in the self of this Soul. Now that soul teaches or gives this knowledge to others through its own mouth. In the beginning of Creation, this knowledge was first revealed by God in souls of *Agni, Vayu, Aditya* and *Angira,* in the form of *Rgveda Yajurveda, Samaveda* and *Atharvaveda* respectively. Vedas are four in number, neither less nor more. God did not give them in any of the worldly languages, instead he utilised Sanskrit as medium, as it was no one's language. In the later times, people started utilising this language as their own medium of expression. Therefore it is improper to say that God becomes partial if He selected one of the Human languages, i.e. Sanskrit, as a medium of His self-expression. Not only the language, God illuminated the meanings of these words also in the hearts of those *Rishis,* automatically Whenever the Seers and *Yogis* bot into after proper concentration, God illuminated their hearts with the meaning at the desired *Mantras.* After understanding those *Mantras* fully, based. their own books on history, which were known as *Brahmanas,* because they 'explained the *Brahman.* i.e. *Veda'.* In *Nirukta* and such other books of the Seers, the *Brahmanas* have been treated separately from the Vedas. The same is true about the socalled branches of the Vedas. As these are based on the human memory, they can be treated at par with the *Vedas. Vedas* are eternal and in the form of same mantras and in the same order, not in the order arranged in the branches. Neither they can be called as 'Books' which are written by the Seers, based on their knowledge of the *Vedas.*

To be continued......

With thanks By: "Flash of Truth"

पृष्ठ 5 का शेष

आसन एवं दण्ड बैठक आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि श्री वाजपेयी जी ने कहा कि "इस प्रकार के आयोजन से छात्रों में नैतिक शिक्षा, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण के साथ-साथ आत्मरक्षा का गुण भी विकसित होगा और भविष्य के महान खिलाड़ियों का उद्भव होगा।" उन्होंने भविष्य में ऐसे कार्यक्रम के आयोजन पर अपने द्वारा निशुल्क प्रशिक्षण देने का आश्वासन भी दिया।

विशिष्ट अतिथि श्रीमती संगीता सोनी ने छात्रों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए छात्राओं के लिए भी ऐसे आवासीय शिविरों की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर उत्कृष्ट आर्यवीरों को प्रशंसा पत्र एवं शिविर में सहयोग प्रदान करने वाले छात्रों को मेडल प्रदान किए गए।। शिविर में सर्वश्रेष्ठ का अवार्ड सुनिल वसुनिया को मिला। दिल्ली से पधारे शैल जी शास्त्री, आशीष आर्य, करण आर्य एवं दिलिप जी शास्त्री द्वारा शिविरार्थियों को उचित प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय के प्राचार्य एवं संस्था सदस्यों द्वारा मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मनोज मालवीय ने किया। कार्यक्रम का आभार संदीप जी बिसारिया ने माना। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री संजय जी पाढ़ी, श्रीमती स्मिता भट्ट, श्रीमती कविता त्रिपाठी एवं समस्त स्टाफ का पूर्ण योगदान रहा। – ***प्राचार्य***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 4 का शेष

आदमी एक साथ खड़े होकर घोषणा करते हैं, अमुक जगह चमत्कार हो गया और वही बीस आदमी हर जगह जाएंगे, चमत्कार की घोषणा करने के लिए। भोली जनता सच्चाई को नहीं समझ पाती। इसलिए सबसे पहले वैदिक धर्म यही सिखाता है कि धर्म के नाम पर कोई भी किसी तरह का ड्रामा करता हो उसको देखकर प्रभावित नहीं होना।

पहले यह निश्चय करना कि जो पढ़ाया जा रहा है, वह आपके हृदय के अनुकूल है। दूसरी बात व्यवहारिक जगत् में, व्यवहार के पक्ष में वे बातें ठीक हैं। तीसरी बात सोचना वेदादि-शास्त्रों से सम्मत है, चौथी बात सोचना विज्ञान सम्मत है या नहीं, या केवल अंधविश्वास तो नहीं है। सारी बातों का निश्चय करने के बाद एकांत में बैठकर चिंतन करिए और जब आपको लगे कि कहीं सही जगह आप आ गए हैं, तो फिर अपने मन को वहां से हिलने नहीं देना, अगर आपको यह एहसास हो जाए कि आप सही जगह पहुंच गए हैं तो फिर एक ही स्थान पर खोदते चले जाना, खोदते चले जाना पानी जरूर मिल जाएगा और अगर दस जगह आपने गड्ढा खोदना शुरू कर दिया तो पानी भी मिलने वाला नहीं है और आपकी शक्ति भी व्यर्थ हो जाएगी। अपने मन को एक जगह जरूर टिका लीजिए लेकिन यह बात ध्यान रखिए कि सत्य तक पहुंचने के लिए वैदिक साहित्य का स्वाध्याय अवश्य करना पड़ेगा।

– ***आचार्य अनिल शास्त्री***

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अतः दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

आर्य समाज से सोशल मीडिया पर जुड़ें

YouTube | Youtube Channel | @thearyasamaj | Subscribe | सब्सकाईब करें

Facebook Page | @thearyasamaj | Like | लाइक करें

Twitter Handle | @thearyasamaj | Follow | फॉलो करें

Whatsapp Channel | 9540045898 | इस नम्बर को अपने मोबाइल में save करें और अपना नाम व स्थान लिखकर भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

गुरुवार 23 जनवरी, 2020 प्रातः 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 23 जनवरी, 2020 को प्रातः 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाना निश्चित किया गया है। अतः समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्य महानुभावों से निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें, जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

- सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तोता (9810855695)

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड में आयोजित शिविर

11-12 जनवरी	आध्यात्मिक योग शिविर
6-9 फरवरी	स्नेह सम्मेलन (वैदिक आध्यात्मिक न्यास)
15 मार्च	यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
12-19 अप्रैल	क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
10 मई	यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
12-17 मई	युवती व्यक्तित्व विकास शिविर
17-24 मई	किशोर चरित्र निर्माण शिविर
14-20 जून	सूचना तकनीक (IT) शिविर (वेद प्रचारकों हेतु उपयोगी बातें)
22-28 जून	आत्ममंथन-अध्यात्म शिविर
12 जुलाई	यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
15-16 अगस्त	आध्यात्मिक योग शिविर
13 सितम्बर	यज्ञ प्रशिक्षण शिविर
10-11 अक्टूबर	आध्यात्मिक योग शिविर
22-29 नवम्बर	क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
11-18 दिसम्बर	ध्यान शिविर
19-26 दिसम्बर	ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

अधिक जानकारी के लिए वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, जिला साबरकाठा (गुजरात) मो. 9427059550, 9723067143 से सम्पर्क करें।

शोक समाचार

श्री रतिराम शर्मा जी का निधन

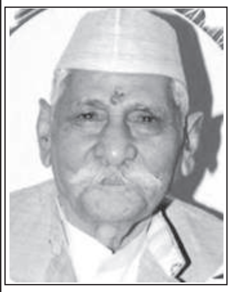

आर्यसमाज सिलिगुड़ी (पश्चिम बंगाल) के प्रधान श्री राजकुमार शर्मा जी के पूज्य पिता एवं आर्यसमाज सिलिगुड़ी के संरक्षक श्री रतिराम शर्मा जी का 30 दिसम्बर, 2019 को को रात्रि 9:26 बजे लगभग 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार रामघाट शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक उनके निवास पर 2, 3, 4 जनवरी को तथा ऋषि भवन सिलिगुड़ी में 5 जनवरी, 2020 को सम्पन्न हुई, जिसमें बंगाल सभा के अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। ज्ञातव्य है कि श्री रतिराम शर्मा जी को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2012 के अवसर पर सम्मान पत्र प्रदान करके सम्मानित भी किया गया था।

श्री सुभाष कोहली जी को पत्नीशोक

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध प्रकाशक - आर्य प्रकाशन के प्रमुख श्री सुभाष कोहली जी की धर्मपत्नी श्रीमती किरण कोहली जी का दिनांक 2 जनवर, 2020 को अकस्मात निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहीं थी। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सभा के वैदिक धर्म प्रचारकों द्वारा पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धाजलि सभा 5 जनवरी, 2020 को आर्यसमाज प्रीत विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ उनके परिवार एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री फूल सिंह आर्य जी का निधन

आर्यसमाज मंगोलपुरी के प्रधान श्री फूल सिंह आर्य जी का दिनांक 26 दिसम्बर, 2019 को लगभग 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ श्री सुरेन्द्र शास्त्री जी द्वारा कराया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 5 जनवरी, 2020 को जे ब्लाक बारातघर मंगोलपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

युवा संन्यासी स्वामी सूर्यदेव जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आर्य वीर दल अधिष्ठाता एवं महर्षि योग आश्रम भटिंडा के अध्यक्ष स्वामी सूर्यदेव जी का दिनांक 31 दिसम्बर, 2019 को निधन हो गया। वे एक उच्चकोटि के विद्वान थे। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा भटिंडा में सम्पन्न हुई जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों सहित क्षेत्रीय आर्यजनें ने भारी संख्या में पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

भजनोपदेशक श्री बृजपाल कर्मठ का निधन

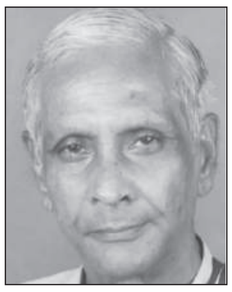

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बृजपाल कर्मठ जी का 13 दिसम्बर, 2019 को प्रातः 5 बजे लगभग 91 वर्ष की आयु में उनके पैतृक गांव कमहेड़ा, मुजफफर नगर में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार गांव में ही पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे अपने पीछे धर्मपत्नी, एक सुपुत्री एवं एक सुपुत्र का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

श्री कमल सिंह वर्मा जी का निधन

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क, शाहदरा दिल्ली के वरिष्ठ उप प्रधान श्री कमल सिंह वर्मा जी का दिनांक 26 दिसम्बर को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 जनवरी को शिव मन्दिर धर्मशाला मानसरोवर पार्क में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री कृष्ण कुमार मेंहदीरत्ता का निधन

आर्यसमाज विवेक विहार के सदस्य श्री कृष्ण कुमार मेंहदीरत्ता जी का 30 दिसम्बर, 2019 की प्रातः अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार ज्वाला नगर शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 31 दिसम्बर, 2019 को आर्यसमाज विवेक विहार में सम्पन्न हुई जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 जनवरी, 2020 से रविवार 12 जनवरी, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 09-10 जनवरी, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 08 जनवरी, 2020

परोपकारिणी सभा, अजमेर के पूर्व प्रधान श्री गजानन्द आर्य जी नहीं रहे

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज के निष्ठावान मनीषी, लेखक, विचारक और महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान और वर्तमान संरक्षक माननीय श्री गजानन्द आर्य का सोमवार 6 जनवरी, 2020 को 90 वर्ष की अवस्था में बैंगलोर में निधन हो गया है। वे लगभग 40 वर्षो से परोपकारिणी सभा, अजमेर के सदस्य, मन्त्री, प्रधान और वर्तमान में संरक्षक के रूप में अहर्निश वैदिक जीवन पद्धति और आर्यसमाज की चिन्तन मनीषा के आराधक, उपासक, संवर्धक और संरक्षक रहे। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं होगा कि आप जिस भी पद पर रहे, आपकी उपस्थिति से वह पद गौरवान्वित हुआ। आपकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। इससे बड़ा गौरव क्या होगा कि आर्यसमाज के दिग्गज मनीषी व यशस्वी विद्वान स्वर्गीय आचार्य प्रो. धर्मवीर जी सार्वजनिक रूप से आपको चरण स्पर्श पूर्वक प्रणाम करते थे। एक विख्यात उद्योगपति के रूप में आपने कलकत्ता में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की। राजस्थान के शेरडा गांव में श्री लालमन आर्य के घर आपने 9 अगस्त, 1930 को आंखें खोली। बाल्यकाल से ही मेधावी और प्रतिभावान आर्य जी का परिवार आर्य सिद्धांतों में दीक्षित था। आपने सामाजिक कुरीतियों का पारिवारिक एवं सामाजिक रूप से कठोर विरोध किया। मृतक भोज, विधवा विवाह एवं अन्य कुरीतियों के निवारण के लिए आपने बहुत कार्य किये। एक लेखक के रूप में भी आपने आर्य समाज की बहुत मूल्यवान सेवा की। वीरांगना महारानी कैकेयी, वेद सौरभ, यज्ञ क्यों?, आर्यसमाज की मान्यताएं जैसी अनेक कृतियां आपकी प्रखर लेखन शक्ति को अभिव्यक्त करती हैं। आपकी वाणी में अन्तर्मन की पवित्रता, वैचारिक दृढ़ता, सांस्कृतिक प्रतिष्ठा और हृदय की उच्चता का भाव व्यक्त होता था।

09/08/1930 - 06/01/2020

आपका निधन परोपकारिणी सभा और आर्यसमाज के साथ सम्पूर्ण देश के लिए अपूरणीय क्षति है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि एवं कोटि कोटि नमन

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली
स्थापना शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ

दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्यसमाज - आर्यसमाज मन्दिर - 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001 की स्थापना का 100वां वर्ष 8 जनवरी, 2020 से आरम्भ हो रहा है। इस उपलक्ष्य में **रविवार 12 जनवरी, 2020** को विशेष यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. कर्णदेव शास्त्री, भजन श्री जितेन्द्र आर्य एवं प्रवचन डॉ. अग्निदेव शास्त्री जी के होंगे। आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- *अरुण प्रकाश वर्मा (प्रधान)* *विजय दीक्षित (मन्त्री)*

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

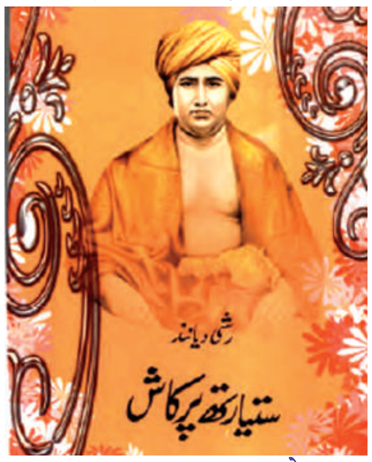

मूल्य मात्र 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह